International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

हिन्दी नाटकों में देश की गौरव–गाथा और देश–प्रेम का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Parmila
Research Scholar,Deptt. of Hindi, NIILM University
Email : rakeshmadhur79@gmail.com

देश प्रेम में राष्ट्रीयता का अनूठा भाव होता है। इसलिए देश का गुणगान होता है। राष्ट्र वर्णन अर्थात् अपने राष्ट्र की प्राकृतिक सुषमा, उसकी गौरवशाली परम्परा तथा इतिहास आदि का वर्णन। भारत प्राकृतिक दृष्टि से एक आकर्षक विशिष्ट देश है संसार में कोई भी राष्ट्र इस तरह की प्राकृतिक विभूतियों से सम्पन्न और सुरक्षित नहीं है। सुरर्शन के अनुसार इसके चरणों में सोने की लंका, कंठ में दरियाओं की माला, इसका रूप अनूप मनोहर, सिर पे ताज हिमाला[1] हे। यह, 'ऊषा सनात–संस्कृति से शीतल निर्मल छवि' वाला है, 'यह महिमा मण्डित, तथा ज्ञान अखण्ड है।'

प्रकृति की गोद में बसा भारत एक मोहक प्राचीन देश है। इसकी भूमि समस्त प्राकृतिक सम्पदाओं से सम्पन्न है। यहां निर्मल जल की नदियाँ प्रवाहित हैं। 'महात्मा–ईसा' नामक नाटक में पांच ऋषि कुमार अपने राष्ट्रीय गान में भारत की छवि को वर्णित करते हुए गाते हैं :–

''हिम–गिरी वज्र–मुकुट है जिस पर अति प्राचीन प्राचीन
प्राचीन हमारी माता है– स्वाधीन !
जलधि–भ्रमर–चुम्बित सरोज–पद
सतत् प्रकृति सेवित विहीन मद !
जल–निर्मल–युत, फलयुत, कल युत सब प्रकार दुख हीन।''[2]

इसी नाटक के अन्य गीत में करूणा, माधव तथा अन्य ऋषि कुमार भारत के ज्ञान–विज्ञान, शोर्य तथा वेदों की संपदा से सम्पन्न होने को रेखांकित करते हुए प्रसन्न मुद्रा में कहते हैं :–

''ज्ञानी, बलवान, सरल,
देश है मेरा .....।
.....
गुंज्जित इसके आँगन,
वेद खेद–हारी .....।
विश्वनाथ से सनाथ
विश्व का सितारा .....।''[3]

भारत को विश्व का धर्म गुरू होने का सम्मान प्राप्त है। यह देश संस्कृति और मानवता का आदि स्रोत माना जाता है। भारत ने विश्व को सदैव शान्ति, अहिंसा और प्रेम का पाठ पढ़ाया है। इसमें ही विश्व

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

से ज्ञान का आदान–प्रदान करते हुए विश्व बंधुत्व, व भाई चारे का भाव प्रसारित किया है 'अशोक की आशा' के इस गीत में विश्वबंधुत्व भाव वाला देश अंकित है:–

''कितना दिया जगत् को हमने,
कितना किया जगत् से अर्जित,
स्नेह कोष, फिर भी यह अक्षय,
विश्वबंधुता अमर असीमित।''[4]

'शशि गुप्त' की पात्र हेलन के गीत के अनुसार भारतवर्ष 'सुन्दर एक नया संसार' है 'जहां पहुंच मधुमयी कल्पना' सरकार हो उठती है। भारत 'अवनि का हरितांचल' है। यहां ऊषा उतरती पवनोन्दोलित उड़ती केसर फूल' है।[5] वस्तुतः हेलन का यह पूरा गीत भारत की प्राकृतिक सुषमा का सूक्ष्म अंकन प्राप्त करता है। मनमोहिनी प्रकृति की गोद में भारत किसका मन नहीं मोह लेता है।

ठसके अलावा हिन्दी के कुछ ऐतिहासिक नाट्य–गीतों में भारत के इतिहास पर रोशनी डाली गई है। इतिहास पुरूषों के कार्यों का वर्णन करते हुए हिन्दुस्तान की महिमा गाई गई है, जैसा कि 'जन कवि–जगनिक' ने प्रस्तुत गीत में, राजपूत राजा पृथ्वीराज चौहान तथा शाहबुद्दीन गौरी के बीच हुए तथा पृथ्वीराज के शब्दभेदी बाण से उसकी हत्या के प्रसंग को रेखांकित करते हुए कहा गया है :–

''समीर नरेश चहुआन थान
.....
पृथ्वीराज तहाँ राजंत भान।
जिहि पकारि साह साहब लान।
.....
सिंगिनी सुसद्द गुण चढ़ि जंजार।
चुक्कई न सबद बेधंत तीर।''[6]

इसी प्रकार 'हर्ष' नामक नाटक के एक नेपथ्य मान में पात्र भट्टाचारण द्वारा, 'पिता–पुत्रयुत चन्द्रगुप्त थे जिनके शौर्य निधान, 'हिमगिर से दक्षिण वारिधि तक फैलाया अधिकार' तथा हुण–युद्ध की संघन निशा में स्कन्द असिाधार', 'भारत–गगन हृदय पर ध्रुव–सी चमकी थी अविकार'[7] कहते हुए चन्द्रगुप्त तथा स्कन्दगुप्त की महानता को प्रकट किया गया है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नाट्य–गीतों में देश की गौरवगाथा के विविध पहलू सामने आते हैं। भारत की श्यामलता, धन–सम्पदा, प्राकृतिक वातावरण, भौगोलिक स्थिति, सौन्दर्य और ऐतिहासिक महत्ता का प्रभावी चित्रांकन किया गया है।

देश प्रेम :–

राष्ट्र के प्रति मन में होने वाला आदर्श लगाव और उत्कर्ष के भाव को देश प्रेम की संज्ञा दी जाती है। इस प्रेम में निश्चित व्यक्ति या वस्तु के प्रति प्रेम ने होकर विशिष्ट जन–समूह की सीमा के प्रति प्रेम होता है। देश प्रेम या राष्ट्र प्रेम में विस्तार और राष्ट्रीयता होती है। देश–प्रेम व्यक्ति प्रेम का ही विस्तृत रूप है। इसमें प्रेम–भावना–बिन्दू विशेष में संकुचित न रहकर विस्तृत रूप अर्जित कर लेती है। इस संबंध में श्री रामचन्द्र शुक्ल जी ने अपने 'लोभ और प्रीति' नामक निबंध में लिखा है कि यह मानव मन की स्वाभाविक वृति है। वह जहां भी रहता हैं जिस समाज के बीच रहकर पलता–बढ़ता है, उसके प्रति उसे राग हो जाता है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

भारतवासियों में देश प्रेम का भाव गहरे रूप–रंग में विद्यमान रहा है। वे सदियों से अपने 'देश और संस्कृति के प्रति गौरव का अनुभव करते रहे हैं तथा अपने देश की विजय के लिए, 'जीते देश हमारा, जीते देश हमारा'[8] कहते हुए राष्ट्रीयता का भाव प्रकट करते रहे हैं। उनके लिए देश 'स्व' का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। वे 'भारत' की प्रतिष्ठा में 'स्व' की प्रतिष्ठा और 'स्व' की प्रतिष्ठा में भारत की प्रतिष्ठा स्वीकारते रहे हैं। 'अशोक की आशा' नामक नाटक के प्रस्तुत गीत में देश–प्रेम का मनमोहक रंग प्रकट है :–

''भारत से हमज ग में वंदित।
हमसे जग में भारत वंदित।
हम उद्‌बोधित, हम आनंदित'[9]

भारतवासियों की सदैव यही कामना रही है।,

'श्रुतिभानु, एकता–वश रहे
धन–ज्ञान कला युक्त देश रहे
भारत तन–मन–धन सारा हो
उसकी सेवा सब द्वारा हो
निजमान–समान दुलारा हो
सबकी आँखों का तारा हो।''[10]

देश को परतंत्र देश भारतवासियों का मन तड़प उठता है। वे 'सरजा शिवा जी' नामक नाटक के पात्र की भांति कह उठते हैं :–

''हमें दृश्य ये तनिक न भावें, शुक पिंजरे आहार।
तड़प–तड़प बन्धन में लेते, हम उसास धन मार।।
आस साध का द्वन्द्व हो रहा, ले चल अब उस पार।
हो स्वाधीन उड़े, विचरें ले अपना देश उभार।।'[11]

भारतवासी मूलतः स्वतंत्रता प्रेमी हैं। वे बंधन पसंद नहीं करते, परतंत्रता को जीवन का अभिशाप मानते है।। उन्हें अपनी हिम्मत पर पूरा विश्वास है, जैसा कि 'अम्बपाली' नामक नाटक के प्रस्तुत राष्ट्रीय गीत में अंकित है :–

''हम स्वाधीन स्वतंत्र रहेंगे,
हम न किसी से धौंस सहेंगे,
हम अजय अनिवार
हम रिपु–हित संसार।''[12]

भारतवासियों की इसी भावना का प्रतीक यहां की संस्कृति, आदर्श, महापुरूष और झण्डा रहा है। भारत का ध्वज लोगों की स्वतंत्रता का द्योतक है। झण्डे को देखते ही भारतवासियों में उत्साह का संचार हो जाता हे। वे गा उठते हैं :–

''तनम न प्राण भले लुट जावे,
इसका मान न जाने पावे,
अखिल विश्व में यह फहरा।''[13]
''लहर–लहर लहराने वाला,
उर में जोश जगाने वाला,

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

करता रण–मद में मतवाला,
वीरों को प्राणों से प्यारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।''[14]

इस प्रकार 'विजयी प्रताप' नामक नाटक में देशाद्धार के लिए वीरों को पुकारते हुए झंडे को शत्रुदल का काल घोषित किया गया है :–

''नभ–चुंबी यह ध्वजा निराली,
रिपु–कुल–हित जो मानों व्याली,
फर–फर उड़ती है मतवाली।''[15]

इस विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है। कि हिन्दी के नाटकों में अनेक गीत भारतीयों के देश–प्रेम व झंडे के गौरव–गान से संबंधित हैं इन गीतों में भारतीयों के भावों इच्छाओं, आकांक्षाओं, सपनों, सच्चाईयों व आदर्शों को तत्कालीन संदर्भों को बखूबी उभारा गया है, जिससे भारतीय संस्कृति के विविध पक्ष इन गीतों में अभिव्यक्त हुए हैं।

सन्दर्भ–सूची :–

1. उदय शंकर भट्ट, शक विजय, पृ0 128
2. पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र', महात्मा ईसा, पृ0 1
3. पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र', महात्मा ईसा, पृ0 32
4. जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, अशोक की आशा, पृ0 43
5. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ0 41
6. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, जनकवि जगनिक, पृ0 116
7. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ0 45
8. रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि, भाग–1, पृ0 75
9. सूदर्शन, सिकन्दर, पृ0 54
10. जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, अशोक की आशा, पृ0 43
11. प्रेमचन्द, कर्बला, पृ0 71
12. गोपालचन्द्र देव, सरता शिवाजी, पृ0 1
13. रामवृक्ष बेनीपुरी, अम्बपाली, पृ0 77
14. हरिकृष्ण 'प्रेमी' कीर्ति–स्तम्भ, पृ0 147
15. हरिकृष्ण 'प्रेमी' कीर्ति–स्तम्भ, पृ0 3